iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 Issue: II Month of publication: February 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.66860

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

“वेदव्यास की इतिहास दृष्टि: महाभारत के विशेष सम्बन्ध में”

डॉ. प्रियम्वदा
बीपीएससी शिक्षक

प्रस्तावना: “जो सर्वत्र है वह इसमें उपस्थित है, परन्तु जो इसमें नहीं है वह कहीं अन्यत्र नहीं है।” महाभारत की यह उक्ति इसकी सर्वत्र व्यापकता एवं विस्तृत कालखण्ड को अवलोकित करने में समर्थ है। यह एक उपजीव्य काव्य है अथवा गाथा है जिसमें भूत भविष्य और वर्तमान की ऐतिहासिक गतिविधियों का वर्णन है। सम्भव महर्षि वेदव्यास इस अलौकिक राजनैतिक घटना के प्रत्यक्ष द्रष्टा रहे इसीलिए इनकी अनुपम कृति में तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक, पारिवारिक आदि अनेकानेक घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन मिलता है जो इतिहास के लक्षणों को प्रदर्शित कर इसे ऐतिहासिक कृति बनाने हेतु समर्थ है। इसे इतिहास, इतिहासोत्तम, निरुक्त1 , धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र भी कहा गया है। इसे लिपिबद्ध करने का कार्य गणेश जी ने किया। इसकी रचना में तीन वर्ष का समय लगा। महर्षि वेदव्यास की सजगता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गणेश को स्पष्ट निर्देश दिया था कि वे बिना अर्थ समझे एक शब्द भी न लिखें।2 वेदव्यास ने अपनी रचना के बारे में कहा है कि उन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष की भांति ज्ञानदृष्टि द्वारा आदि से अन्त तक देखकर इसकी रचना किया। महाभारत की रचना में व्यास जी ने वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा अन्य कई शास्त्रों की सहायता ली थी।3

उन्होंने अपने समय की घटनाओं को प्रत्यक्ष देखकर उसे विस्तारपूर्वक यथावत् लिखा साथ ही एक इतिहासकार की भांति उन घटनाओं, राजाओं, राजवंशों आदि का भी उल्लेख किया जो उनके समय के पूर्व भूतकाल में विद्यमान थे। उन घटनाओं व चरित्रों को उन्होंने आख्यान के रुप में प्रस्तुत किया।

बीज वाक्य- महाभारत, वेद, अनुसन्धान, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, मोक्षशास्त्र

किसी भी इतिहास लेखन हेतु जिस प्रकार अनुसन्धान की आवश्यकता होता है उसी प्रकार का अनुसन्धान वेदव्यास जी ने महाभारत के लेखन में किया। उन्होंने घूम-घूमकर घटनाओं,राजाओं, उनकी वंशावलियों, किसी भी राज्य की भौगोलिक स्थिति, नदियो, पर्वतों,
नगरों आदि का विधिवत् ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही उसे अपने इस इतिहासवृत्त में स्थान दिया है। जहां कहीं भी उन्हें पूर्ण जानकारी नहीं हो पायी है वहां यह कह कर मिथ्या जानकारी देने से बचे हैं कि ‘‘अमुक’’ के विषय में सभी लोग नहीं जानते। व्यासजी ने घटनाओं का विवरण क्रमबद्ध तरीके से दिया है तथा अनेक स्थलों पर समय एवं तिथि का उल्लेख भी किया है। जहां कहीं भी आख्यान या उपाख्यान का सहारा लिया गया है तो उसकी प्राचीनता तथा उस आख्यान के आगे या पीछे की किसी घटना का उल्लेख कर उसकी क्रमबद्धता तथा ऐतिहासिकता को सिद्ध करने का प्रयास भी किया गया है।

पूरे महाकाव्य में एक ही नाम के दो व्यक्तियों के होने पर दोनों का परिचय इस प्रकार दिया गया है कि पाठक बिना किसी दुविधा के दोनों भेद कर सके। आज के समय में एक ही नाम के दो व्यक्ति होने पर हम ज्यादातर नाम के आगे प्रथम द्वितीय या तृतीय आदि लगाकर उनकी पहचान करते हैं किन्तु महाभारत में प्रत्येक व्यक्ति एवं उसकी स्वतंत्र पहचान को चिन्हित करने का प्रयत्न किया गया है। इतिहास लेखन हेतु साक्षात्कार विधि, यात्रा विधि का अन्त एवं जीवन चरित्र का भी सहारा लिया गया है। कई पात्रों की आत्मकथाओं द्वारा भी कुछ ऐतिहासिक वृत्त को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। इसे कई पर्वों में विभक्त कर दिया गया है जिससे अध्ययन में सुविधा हो गयी है। महाभारत की विषयवस्तु अत्यन्त व्यापक है। इसमें लोक जीवन के प्रत्येक पर्व पर विचार किया गया है जिससे इस महाकाव्य से तत्कालीन समाज राजनैतिक स्थिति परिस्थिति, धार्मिक विचारधाराओं, भौगोलिक क्षेत्रों, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, प्रथाओं, मान्यताओं, रीतिरिवाजों, धार्मिक क्रियाकलापों, न्यायप्रणाली तथा वैज्ञानिक प्रगति आदि की जानकारी सहजरुप से हो जाती है। यद्यपि महाभारत मूलरुप से भरतवंशियों का इतिहास है किन्तु इसमें भरतवंशियों के इतिहास के साथ-साथ कुरुवंश, यदुवंश, ययाति वंश, इक्ष्वाकुवंश, अनेक देवताओं, राजर्षियों, ब्रह्मर्षियों, ऋषियों, मुनियों आदि का भी जीवनवृत्त एवं वंशावली दी गयी है। अनेक युद्धों, कारण एवं परिणाम का भी वर्णन महाभारत में है। युद्ध में प्रयोग होने वाले अस्त्रों, शस्त्रों, युद्ध का स्थान, युद्ध में भाग लेने वाले व्यक्तियों सारथी तक का नाम, युद्ध के तरीकों, युद्ध के समय की गयी व्यूहरचना तक का उल्लेख महाभारतकार की सूक्ष्म दृष्टि एवं इतिहास चेतना का ही परिणाम है।

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

महाभारत में सतयुग, त्रेतायुग द्वापर तथा कलियुग इन चारों युगों के परिमाण एवं प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। कई धार्मिक सम्प्रदायों जैसे-पाशुपत सम्प्रदाय, पांचरात्र सम्प्रदाय, स्कन्दकार्तिकेय पूजा आदि की भी व्युत्पत्ति प्राचीनता तथा सिद्धान्तों के साथ कई दर्शनों तक का उल्लेख महाभारत में है। सांख्य, योग जैसे दर्शनों की विस्तृत व्याख्या महाभारत में हुई है। धर्म के स्वरुप का वर्णन अनेक दृष्टियों के अनुसार (अनेक मतानुसार) किया गया है। विभिन्न शास्त्रों, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद जैसे लौकिक शास्त्रों की व्युत्पत्ति एवं इतिहास, दिव्य नगर निर्माण कौशल, विभिन्न प्रकार के दिव्य विमान, अंतरिक्ष स्टेशन4 विभिन्न प्रकार के अस्त्र शस्त्र, वायुसेना5, जल सेना, अश्वसेना, गजसेना, रथ सेना एवं पैदल सेना, युद्ध की विभिन्न शैलियों, श्येनव्यूह, चक्रव्यूह, मकरव्यूह, क्रौंचव्यूह, क्रौंचारुढ़व्यूह, वज्रव्यूह आदि व्यूहों, लिंगपरिवर्तन6,परखनली शिशु7,सेरोगेट मदर8,आईवीएफ9 तकनीक जैसे आज के क्रान्तिकारी विज्ञान का उल्लेख व्यास जी ने किया है।

महाभारत में वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा, दासप्रथा, स्त्रियों की स्थिति, सामाजिक रीति-रिवाज, प्रथाओं मान्यताओं, विवाहप्रथा, विवाह के प्रकार एवं उनके उदाहरण स्वागत सत्कार की विधियों, धार्मिक क्रिया कलापों, न्याय, शिक्षा, रोग-व्याधि, चिकित्सा, दान, धर्म, कर्तव्य विधान, पुरुषार्थ अनेक जातियों, जनजातियों, तक के इतिहास को लिखा गया है।

भौगोलिक दशा में नदियों, पर्वतों, पहाड़ों, झरनों, तालाबों, समुद्र, रास्तों, वनस्पतियों, कृषि, रोजगार, व्यापार, जीविका के अन्य साधनों, पशुपतियों, मौसम, यह नक्षत्र, सूर्य-चन्द्रमा, तारों आदि का उल्लेख महाभारत में किया गया है। भौगोलिक दशा के वर्णन में भी ज्यादातर उन व्यकितयों का सहारा लिया गया है जो लोग क्षेत्र विशेष में रहते रहे हों या किसी न किसी प्रकार भ्रमण किए रहे हों।

चीन, कम्बोज, बाह्लीक, लंका जैसे विदेशी राष्ट्रों का भी उल्लेख महाभारत में मिलता है। ऐसा बहुत से विद्वानों का मानना है कि महाभारत में ऐतिहासिकता कम तथा काल्पनिकता का पुट अधिक है किन्तु यदि बारीकी से अध्ययन किया जाए तो उपरोक्त मत मिथ्या साबित होता प्रतीत होता है।

सर्वप्रथम हम द्रौपदी, धृष्टद्युम्न, कौरवों तथा दुःशाला के जन्म को देखें तो द्रौपदी और धृष्टद्युम्न को यज्ञ की वेदी से उत्पन्न बताया गया है तथा उस यज्ञ को बहुत कठिन एवं खर्चीला तथा सभी लोगों द्वारा न सम्पन्न होने वाला बताया गया। यदि इसे आज के टेस्टट्यूब बेबी से जोड़ कर देखें तो टेस्टट्यूब बेबी और द्रौपदी एवं धृष्टद्युम्न के जन्म में कुछ समानताएं हैं। इन दोनों के जन्म में कम किन्तु कौरवों और दुःशाला जन्म और टेस्टट्यूब बेबी में बहुत सी समानताएं हैं। तत्कालीन प्रौद्योगिकी शायद और अधिक उन्नत थी जिससे बच्चे को जन्म तक मां के गर्भ से बाहर रखा गया। सत्यवती और द्रोणाचार्य के जन्म आईवीएफ तकनीकि के ही उदाहरण हैं। स्थूणाकर्ण और पक्ष शिखण्डी द्वारा लिंग परिवर्तन का सर्व प्राचीन उदाहरण महाभारत में है।

इसी प्रकार महाभारत में वर्णन है कि वेदव्यास जी के पास दिव्य दृष्टि थी जिससे वे किसी भी घटना को प्रत्यक्षतः देख सकते थे। अपनी इसी दृष्टि को उन्होंने संजय एवं राजा दुपुद को भी दिया था जिससे संजय ने पूरे महाभारत युद्ध का लाइव टेलीकास्ट धृतराष्ट्र को सुनाया था। युद्ध पूर्व अनेक देशों, प्रदेशों नदियों व अन्य जगहों का भी दर्शन कर धृतराष्ट्र को उसके बारे में बताया।10

इसी प्रकार दुपुद ने व्यास जी से ही दिव्य दृष्टि पाकर पाण्डवों एवं द्रौपदी को उनके वास्तविक रुप की झांकी देखी।11

यदि हम इस दिव्य दृष्टि को आज की संरक्षित तस्वीर या वीडियो से जोड़कर देखें तो क्या यह दिव्य दृष्टि आज के विज्ञान का प्राचीन रुप नहीं है?

इसी प्रकार इन्द्र और यम दोनों जो अन्तरिक्ष स्थानीय देवता थे की सभाओं का वर्णन भी व्यास जी ने किया है जो कि अन्तरिक्ष में स्थापित थीं। इन्द्र और यम की सभाओं में विशेष विमानों द्वारा तथा विशेष वस्त्रों को ही धारण कर जाया जा सकता था। व्यास जी ने 'सौभ' नामक विशेष विमान के बारे में बताया है। जो केवल 'शाल्व' नामक राजा के पास था। इस विमान का प्रयोग शाल्व ने श्रीकृष्ण के ऊपर आक्रमण के समय किया था।12 इस विमान की विशेषता यह थी कि यह कभी दिखाई देता और कभी नहीं दिखाई देता अर्थात इसकी दृश्यता चालक की इच्छानुसार थीं।

महाभारत में उल्लिखित इस विशेष विमान को कुछ समय के लिए काल्पनिक माना जा सकता था किन्तु आज की प्रौद्योगिकी द्वारा साबित हो चुका है कि विशेष प्रकार की पेन्टिंग अथवा मैकेनिज़्म द्वारा इस प्रकार के विमानों का निर्माण सम्भव है, जो 'रडार' की भी पकड़ में न आते हों। इसी तकनीकि का प्रयोग कर अमेरिका ने ऐसे हेलीकॉप्टर्स का निर्माण किया तथा ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान में मारने के समय इनका सफल प्रयोग भी कर चुका है। एक हेलीकॉप्टर में कुछ तकनीकी खराबी आने के कारण उस हेलीकॉप्टर को घटनास्थल पर स्वयं ही नष्ट कर दिया ताकि इस विशेष तकनीकि का ज्ञान सभी को न हो सके।

महाभारत में बहुत से दिव्यास्त्रों के बारे में बताया गया है जिनका संचालन विधिवत् प्रशिक्षण के बाद ही कोई कर सकता था ये सबकी पहुंच से बाहर थे। अर्जुन के पास पाशुपतास्त्र, ब्रह्मास्त्र तथा अन्य कई दिव्यास्त्र थे जिनके प्रयोग हेतु अर्जुन ने इन्द्र के सैन्य प्रशिक्षकों से कई वर्षों तक विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया था। इन दिव्यास्त्रों के प्रदर्शन एवं व्यर्थ प्रयोग पर रोक था। क्योंकि ये अस्त्र तीनों लोकों के लिए विनाशकारी थे।13 इन दिव्यास्त्रों के प्रयोग के पहले विशेष दिव्य वस्त्रों को धारण करना अनिवार्य था। जिससे इनका दुष्प्रभाव प्रयोगकर्ता के ऊपर न पड़े। ब्रह्मास्त्र जैसे अस्त्र की विशेषता यह थी कि यह लक्ष्य को जलाकर भस्म कर देता था। शायद यह आज के शक्तिशाली बमों का ही प्राचीन स्वरुप रहा हो। व्यास जी ने इनकी निर्माण विधि तो नहीं बतायी किन्तु इनकी मारक क्षमता तथा विनाश की भयंकरता बता कर यह साबित कर दिया है कि आज की मिसाइलों, एवं अणुबमों, परमाणु बम या हाईड्रोजन बम के प्राचीन रुप ही रहे होंगे।

व्यास जी द्वारा इन सारी वैज्ञानिक उत्पादों को अपनीरचना में स्थान देने में हमें तत्कालीन प्रौद्योगिकी की जानकारी प्राप्त होती है। व्यास जी द्वारा उल्लिखित इन वैज्ञानिक आविष्कारों को केवल इस आधार पर काल्पनिक मानकर ऐतिहासिक न मानना अनुचित होगा कि उन्होंने उपरोक्त वैज्ञानिक उत्पादों या घटनाओं का वर्णन किया परन्तु उसकी निर्माण विधि/प्रक्रिया का वर्णन क्यों नही ंकिया? ऐसा होने के पीछे दो कारण हो सकते है। पहला यदि पूरी प्रक्रिया का वर्णन कर दिया जाये तो ये विधियां जनसामान्य में आम हो जायेंगी तथा इनका दुरुपयोग भी किया जा सकता है, दूसरे जैसे आज के युग में क्लोनिंग सिस्टम, परमाणुबम, मोबाइल फोन, हवाईजहाज, राकेट या इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं तथा वैज्ञानिक सुविधाएं समाज में मौजूद हैं जिन्हें सभी जानते है। किन्तु उनकी निर्माण विधि केवल विषय विशेषज्ञ ही जानते हैं। उसी प्रकार महाभारत में वर्णित उक्त वस्तुओं के निर्माण प्रक्रिया के बारे में केवल विशेषज्ञ ही जानते रहे होंगे। व्यास जी उनके बारे में जानते रहे होंगे किन्तु पूरी प्रक्रिया न जानने के कारण वर्णन न किये हों। ऐसा होने की दशा में उनकी इतिहास दृष्टि को काल्पनिक नहीं कहा जा सकता है।

व्यास जी का घटनाओं के वर्णन के प्रति सजगता को देखकर प्रथम सम्भावना को ही बल मिलता है क्योंकि व्यास जी स्वयं एक वैज्ञानिक थे। उन्हें टेस्ट ट्यूब बेबी निर्माण की प्रक्रिया का पूरा ज्ञान था। उन्हें लाइव टेलीकास्ट रिकार्डेड टेलीकास्ट की प्रक्रिया का ज्ञान था। प्रसारण की इन्हीं तकनीकियों को व्यास जी ने दु् पुदएवं संजय को प्रदान किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] आदिपर्व, अंशावतरण पर्व, पृष्ठ 209
[2] वही पृ0 23
[3] वही पृ0 22
[4] सभापर्व में इन्द्र और यम की सभा, जो वास्तव में स्पेस स्टेशन थे।
[5] वनपर्व, अर्जुनाभिगमन पर्व
[6] उद्योग पर्व, अम्बोपाख्यान पर्व पृ0 565
[7] आदिपर्व, सम्भव पर्व पृ0 400
[8] उद्योगपर्व, भगवद्यानपर्व अध्याय 365 से 369 तक
[9] आदिपर्व अंशावतरण पर्व पृ0 214
[10] भीष्मपर्व, जम्बूखण्ड विनिर्माण पर्व पृ0 600
[11] वैवाहिक पर्व पृ0 655 श्लोक 38
[12] वनपर्व, अर्जुनाभिगमन पर्व पृ0 66
[13] वनपर्व, आजगर पर्व पृ0 56

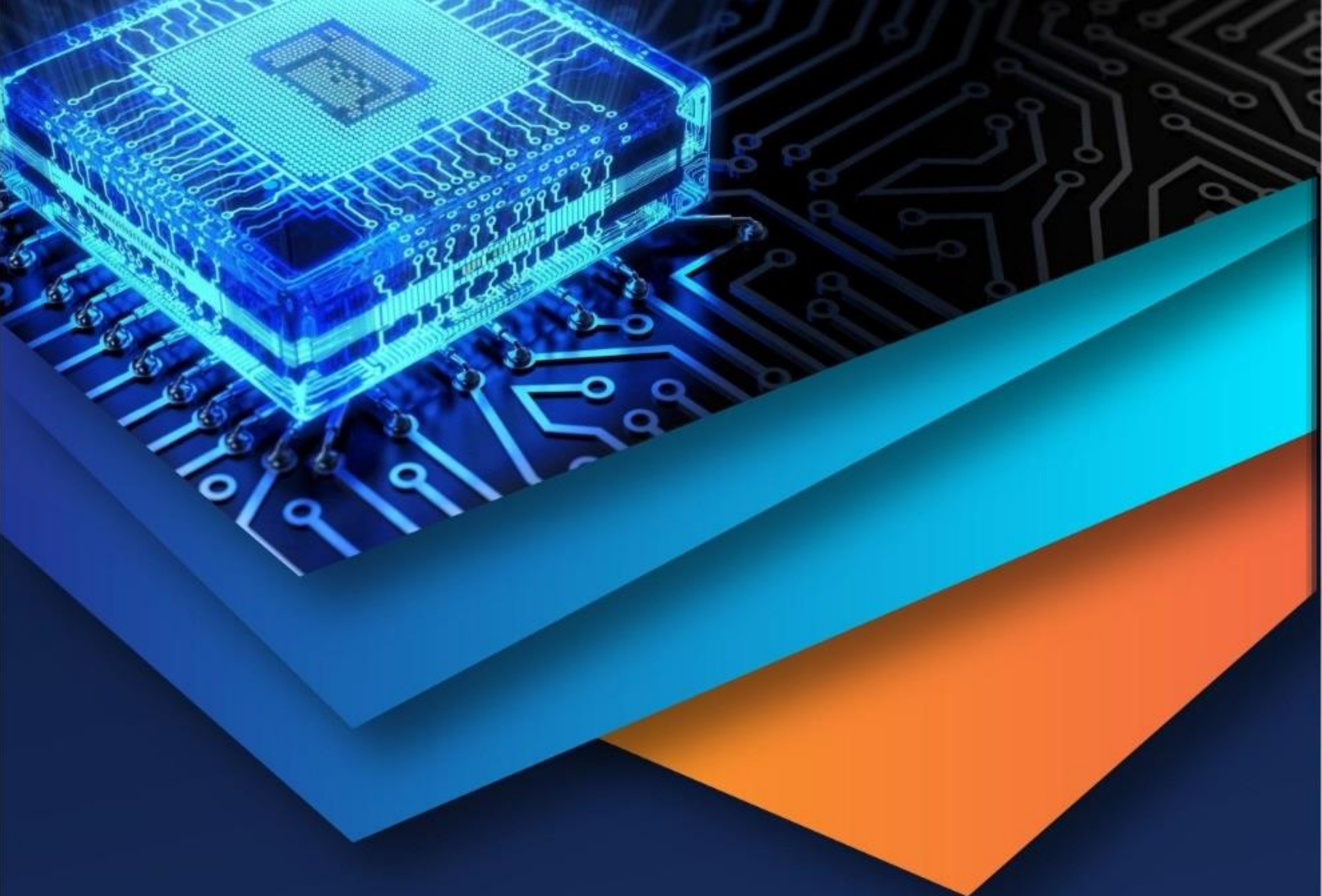

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR:
7.129

IMPACT FACTOR:
7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)